

डॉ. धर्मवीर भारती

डॉ. धर्मवीर भारती (जन्म- 25 दिसंबर, 1926 - 4 सितंबर, 1997) आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख लेखक, कवि, नाटककार और सामाजिक चिंतयारक थे। वे सांस्कृतिक पत्रिका 'धर्मवुग' के प्रधान संपादक भी रहे। डॉ. धर्मवीर भारती को 1972 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। उनका उपन्यास 'युनाहों का देवता' हिन्दी साहित्य के इतिहास में सदाबहार माना जाता है।

जन्म
धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसंबर 1926 को इलाहाबाद के 'अतरसुद्धा' नामक मोहल्ले में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री. चिंतजीवलाल वर्मा और माता का नाम श्रीमती चंद्रेन्द्री था।

भारती के पूर्वज पांडिती उत्तर प्रदेश में शहजहाँपुर जिले के 'खुदागंज' नामक कस्ते के जमीदार थे। वे डेंड, पौधों, फूलों और जानवरों तथा पक्षियों से प्रेम बचपन से लेकर जीवन पर्यन्त रहा। संस्कृत देते हुए बड़े लाड़ व्यार से माता पिता अपने दोनों घोंसलों धर्मवीर और उनको छोटी बनने वीरवाला का पालन कर रहे थे कि अचानक उनकी माँ सूखा बीमार पड़ गयी दो साल तक बीमारी चलती रही। बहुत खर्च हुआ और पिता पर कर्ज़ चढ़ गया। यहीं की बीमारी और कर्ज़ से वे मन से टूटे से गये और स्वयं भी बीमार पड़ गये। 1939 में उनकी मृत्यु हो गई। [1]

शिक्षा

उन्हीं दिनों गाहायु पुस्तकों के अलावा कविता पुस्तकों तथा अंग्रेजी उपन्यास पढ़ने का बेहद शौक जाना। स्कूल खल्ले होते ही घर में बस्ता पटक कर बचानालय में भाग जाते वहाँ देर शाम तक किताबें पढ़ने रहते। इंटरमीडिएट में पढ़ रहे थे कि गांधी जी के आहान पर पढ़ाइ छोड़ दी और आजारी की लडाई में कूद पड़े। सुभास के प्रशंसक थे, बचपन से ही शस्त्रों के प्रति आधारित भी जग उठा था से ही समय हाथियार साथ में लेकर चरने लगे और 'शस्त्र क्रांतिकारी दल' में शमिल होने के सपने में संज्ञेने लगे, परं अंत मामा जी के समझने वालों के बाद एक वर्ष का बात करने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय में स्नातक की पढ़ाई के लिए दाखिला लिया। कोर्स की पढ़ाई के साथ साथ उन्हीं दिनों शैली, कीदस, वद्वर्षी, टैंसिस, एमिली डिक्सिन तथा अंग्रेजी फ्रांसीसी, जर्मन और सेन के कवियों के अंग्रेजी अनुवाद पढ़े, एमिल जोला, शर्दूचंद, गोर्की, कुमुखिन, बालजाक, चाल्स डिकेन्स, विक्टर हूगो, दॉस्टोवेट्स्की और तॉल्स्टोयो के उपन्यास खबू ढूक कर पढ़े। [1]

लेखन और पत्रकारिता

स्नातक, स्नातकोत्तर की पढ़ाई द्युशनों के सहारे चल रही थी। उन्हीं दिनों कुछ समय भी प्राचीनता भालवीय के साथ 'अन्यद्युम' में काम किया। इलाहाबाद जोशी के साथ 'संगम' में काम किया। उन्होंने दोनों दोनों 'पत्रकारिता' के गुरु सीखे थे। कुछ समय तक 'हिन्दुसारी' एकडेसी में भी काम किया। उन्हीं दिनों खुबकहानियाँ भी लिखीं। 'युनाहों का गांधी' और 'र्वर्वा और पृथ्वी' नामक दो कहानी संग्रह छ्ये। छात्र जीवन में भारती पर शरत चंद्र चौधुरायाद्य, जयशंकर प्रसाद और अंस्कर बाल्डल का बहुत प्रभाव था। उन्हीं दिनों वे माझन लाल चौथेर्वदी के सम्पर्क में अबै और उन्हें पिता तुल्य मानने लगे। दादा माखनलाल चतुर्वर्दी ने भारती को बहुत प्रत्याहित किया। [1]

उच्च शिक्षा और प्रतिशील लेखक संघ

स्नातक में हिन्दी में सर्वाधिक अंक मिलने पर प्रख्यात 'विंतामणि गोल्ड मैडल' मिला। स्नातकोत्तर अंग्रेजी में करना चाहते थे पर इस मैडल के कारण डॉ. धर्मवीर वर्ष के कहने पर उन्होंने दिन्हीं में नाम लिखा लिया। स्नातकोत्तर की पढ़ाई के कहने पर उन्होंने दिन्हीं में नाम लिखा लिया। स्नातकोत्तर की पढ़ाई तक 'हिन्दुसारी' एकडेसी में भी काम किया। उन्हीं दिनों खुबकहानियाँ भी लिखीं। 'युनाहों का गांधी' और 'र्वर्वा और पृथ्वी' नामक दो कहानी संग्रह छ्ये। छात्र जीवन में भारती पर शरत चंद्र चौधुरायाद्य, जयशंकर प्रसाद और अंस्कर बाल्डल का बहुत प्रभाव था। उन्हीं दिनों वे माझन लाल चौथेर्वदी के सम्पर्क में अबै और उन्हें पिता तुल्य मानने लगे। दादा माखनलाल चतुर्वर्दी ने भारती उत्तर प्रत्याहित किया। [1]

शोध कार्य

डॉ. धर्मवीर वर्मा के निर्देशन में 'सिद्ध साहित्य' पर शोध कार्य चल रहा था। साथ ही साथ उस समय कई कवियों लिखी गई जो बाद में 'डंडा लोहा' नामक पुस्तक के रूप में छापी गई। और उन्हीं दिनों 'युनाहों का देवता' उपन्यास लिखा। साथीयार से नोहंग के बाद 'प्रगतिवाद' एक समीक्षा नामक पुस्तक लिखी। कुछ अंतराल बाद ही 'सूरज का साथवां घोड़ा' जैसा अनोखा उपन्यास भी लिखा। [1]

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी प्राध्यापक

शोधकार्य पूरा करने के बाद वही विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक के रूप में नियुक्त हो गई। देखते ही देखते बहुत लोकप्रिय अध्यापक के रूप में उनकी सम्मान देने लगी। उसी दैवत 'नदी प्यासी थीं नाम के एकांकी नाक के संग्रह' और 'चाँद और टूटे हुए लोहा' नाम से लोलित रसनाओं का संग्रह छ्या और शोध प्रब्रह्म 'सिद्ध साहित्य' भी छ्य गया। मौलिक लेखन की गति बड़ी तेजी से बढ़ रही थी। साथ ही अध्ययन भी पूरी मेहनत से किया जाता रहा। उस दौरान 'अस्तित्ववाद' तथा पश्चिम के अन्य नवे दर्शनों का विवाद अध्ययन किया। रिल्के की कविताओं, काम के लेख और नाटकों, ज्याँ पॉल स्ट्री की रचनाओं और कार्ल मार्क्स की दार्शनिक रचनाओं में मन बहुत ढूबा। साथ ही साथ महाभारत, गीता, विनोदी और लोहित के सामग्री को शोधने की अवधारणा भी गहरायी से अध्ययन किया। गांधीजी को नींव दिए से समझने को कोशिश की। भारतीय संत और सुपी की काव्य और विशेष रूप से कवीर, जायसी और सूर् परिपक्व मन और पैनी ही चुकी समझ के साथ पुनः और समझा। [1]

मुम्बई और संपादन

इसी बीच 1954 में श्रीमती कौशल्या अश्व कामा द्वारा मुजाहै गई एक पंजाबी शरणार्थी लड़की 'कांता कोहली' से विवाह हो गया। संपादकों के तीव्र वैष्णव के कारण वह विवाह असफल रहा। बाद में सम्बंध चिन्होंगे हो गया। लेखन का काम अबाध चल रहा था। 'सत गंत वां', 'अध्याया', 'कनुपिया' और 'देवितां' प्रकाशित हो चुके थे। कुछ ही समय बाद बर्वाई से एक प्रसाद 'धर्मवुग' के संपादन का आया। निकाप को आगे न चला पाने की कस्फ मन में थी ही, संपादन की लेखन के प्रसादव पर विचार किया और विश्वविद्यालय से एक वर्ष की छुट्टी लेकर 1960 में बर्वाई चले आये। [1]

पुनर्विवाह

धर्मवुग के संपादन में नेवे शिक्षित नजर आने लगे, साहित्यिक लेखन से इतर देख के लिए बहुत कुछ बड़े काम किये जा सकते हैं वह समझ में आने लगा तो विश्वविद्यालय की नौकरी से त्याप्रत देकर पूरे सम्पर्क के साथ धर्मवुग के संपादन में ध्यान केंद्रित किया। इस दौरान एक अत्यंत शिक्षित और संग्राही परिवार में जयी इलाहाबाद विश्वविद्यालय की शोध छात्रा जो कलकाता के 'शिक्षावतन कालीज' में हिन्दी की प्राध्यापक बन चुकी थी, उससे विवाह किया। वही 'पुण्यलता शमा' बाद में पुण्या भारती नाम से प्रख्यात हुई। [1]

धर्मवुग पत्रिका

मुख्य लेख : धर्मवुग धर्मवीर भारती के द्वारा संपादित 'धर्मवुग' पत्रकारिता की कौसीटी बन चुका है। आज के पत्रकारिता के विद्यार्थी उनकी शैली को 'धर्मवीर भारती कूल और जर्नलिज्म' के नाम से जानते हैं। सांस्कृतिक, सामाजिक, आधिकारिक, वैज्ञानिक, खेलकूट, सालिडिक सभी पत्रों के समेत हुए राष्ट्रीय और

संपादकीय

सत्यं ब्रूयात् प्रियम् ब्रूयात्

-डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज'

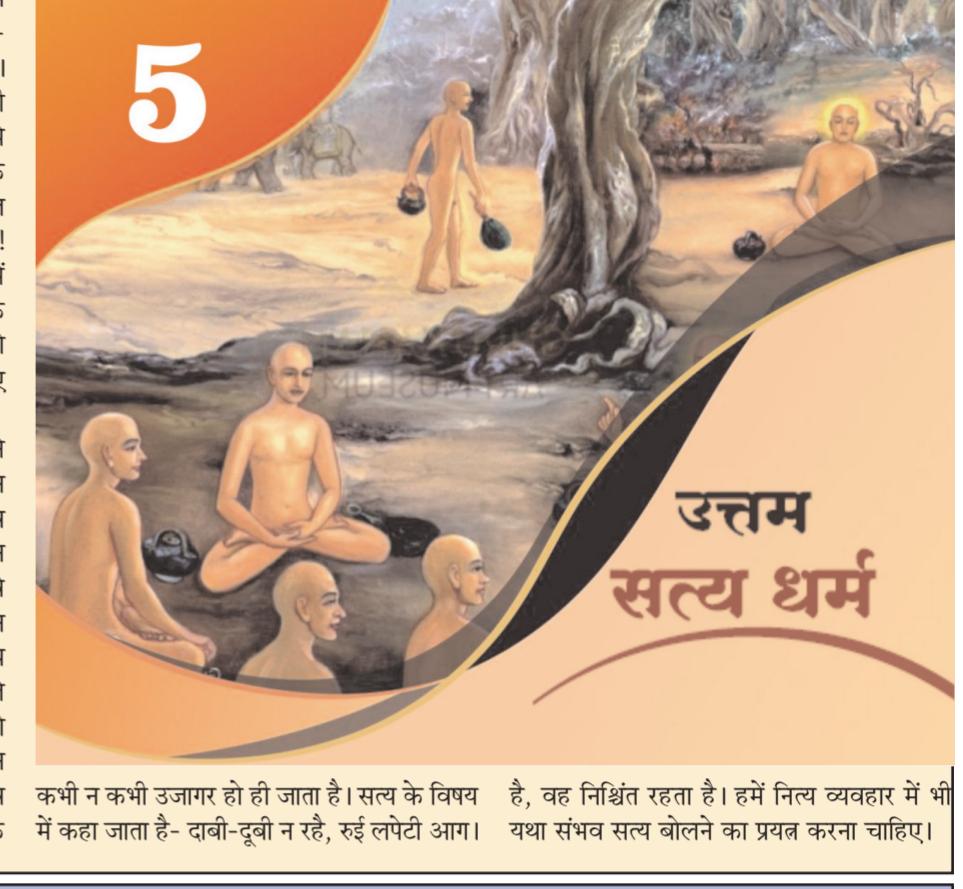


लेकर भरी सभा में उनके समाने गया। पूछता है वह चिंडिया जीवित है या मृत? वह जीवित चिंडिया के गले पर हाथ का अंगूठा लगाये था, सोच कर गया था यदि उन्होंने बोला जीवित है तो अंगूठा से गला दबा कर मार सकता है। उन्होंने राजकुमार के प्रश्न के उत्तर में कहा- ह्यतुम् वह मृत चिंडिया हाय में लिये हुए हो। राजकुमार ने तुरत मुझे खोल कर चिंडिया उड़ा दी और कहा इन संत के कुछ जात नहीं हो पाता ये ज्ञान हैं, देखो थोड़ी सी बात भी नहीं बात सके, इनके विषय में व्यर्थ कहा जाता है कि ये मन की बात जान कर सच बता देते हैं संत ने कहा- राजकुमार!

हितकारी वचन, मित अर्थां सीमित, अल्प केवल जितनी आवश्यकता हो उतने वचन बोलना और प्रिय के लिए तो कहा है कटुक-कटोर- निंदा नहीं वचन उचारै। हमारा राष्ट्रीय वाचा है -ह्यसत्यत्वेव सत्य को झकने के लिए व्यक्ति को अनेकों झुठ बोलना पड़ते हैं, सत्य

रुद्ध में आग लगी हो तो उसे कितना भी लपेट कर ढक दिया जाय, धीरे धीरे सुलगत सुलगत वह विकाराल रूप लेकर सामने आ ही जाती है। एक सत्य को झकने के लिए व्यक्ति को अनेकों झुठ बोलना पड़ते हैं, और जो एक बार सत्य बोल देता

5



कभी न कभी उत्तराग हो ही जाता है। सत्य के विषय है, वह प्रिंशिंत रहता है। हमें नित्य व्यवहार में भी कहा जाता है- दावी-दूबी न रहै, रुद्ध लपेटी आग। यथा संभव सत्य बोलने का प्रयत्न करना चाहिए।

राशि फल

8 समाज जागरण

देव रात प्रतियोगिता में अहमद, प्रियंशु, एजे राज ने लहराया परचम

दैनिक समाज जागरण रिपोर्ट

राजकुमार भगत (पाकड़)
प्रोनीता पाकुड़। सर्वजनिक गणेश पूजा समिति रेलवे मैदान पाकुड़ में आयोजित 24वें गणपति महोत्सव के तीसरे दिवान नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 30 दीवों ने अपनी जगह बनाई। अंतिम महा मुकाबले में 15 कार्यक्रमों सफल हों। बहरमपुर के दीपनिधि बासाक व रामगुहाहट के शिवाजी सिंह ने इस रोमांचक मुकाबले का निर्णय दिया। जनिवर टीम के अंतिम मुकाबले में प्रतिभागी सफल हों। एजे राज द्वितीय प्रतियोगिता में अहमद अमन अहमद द्वितीय प्रियंशु सरकार दृष्टियां हरिष्ठित मध्यांतर हो चौंहीं सीनियर में प्रथम स्थान प्रीतीता भास्कर द्वितीय सुरजों तथा दृष्टिये प्रेषण प्रभा ही। छठ के मुकाबले में प्रथम एजे राज द्वितीय सुरम दिव्य तथा दृष्टिये संजीव और रोशन सदावर ने बाजी मारी। वही गुरु के महा मुकाबले में प्रथम स्टेप अप डांस कु द्वितीय ब्लैकस्टेन तथा दृष्टिये स्टान पर बीं तू गैलक्सी ने कब्जा जामा।



मध्य रात तक चले इस प्रतियोगिता में शामिल सफल प्रतिभागियों का नगर परिषद अध्यक्ष सम्मा साहा अनुग्रहित प्रसाद दिया। एजे राज द्वितीय सुरम दिव्य तथा दृष्टिये संजीव और रोशन सदावर ने बाजी मारी। वही गुरु के महा मुकाबले में प्रथम स्टेप अप डांस कु द्वितीय ब्लैकस्टेन तथा दृष्टिये स्टान पर बीं तू गैलक्सी ने कब्जा जामा।

सदर अस्पताल, सोनाजोड़ी में मेगा हेल्थ कैंप का उद्घाटन डीसी ने किया जिला के लिए वरदान साबित होगा मेगा हेल्थ कैंप: डीसी पीवीटीजी के परिवारों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा प्रदान की जाएगी:-

डीसी मंच का संचालन डीएस डॉक्टर अमित कुमार ने किया।

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

अधिकारी दिवारी

सदर अस्पताल, सोनाजोड़ी में शुक्रवार को मेगा हेल्थ कैंप का आयोजन किया गया। इस कैंप का उद्घाटन उपायुक्त प्रसाद रंगन, उप विकास अयुक्त मों प्रधान अखिल अखिल व रिप्रिल संजन मंडू कुमार टेकीवाल के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्ञविल कर किया। पाकुड़ उपायुक्त वरण रंगन ने कहा कि जिले में 12,000 पीवीटीजी प्रतिवार हैं। स्वास्थ्य विभाग के दीम द्वारा एक महीने से ढोंग टू डोर जाकर स्क्रीनिंग किया जा रहा है। स्क्रीनिंग करके वैसे व्यक्तियों को चिह्नित किया गया है जिन लोगों को आगे का इलाज का जरूरत है। आज फर्ट रस्टेंज में 4000 परिवारों को स्क्रीनिंग किया जा सके। उप विकास अयुक्त मों शाहद अखिल ने अपने संबोधन में कहा कि आज सदर अस्पताल में मेगा हेल्थ कैंप का आयोजन किया जा रहा है। सदर अस्पताल में बहुत सारे विकित्सा सुविधा उपलब्ध है। इस



स्वास्थ्य मुविधाओं को जन-जन तक पहुंचाया जा सके। वहीं उपायुक्त ने सदर अस्पताल में आई ओपोटी एवं सर्जरी ओपोटी का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उपायुक्त ने रिप्रिल संजन को जरूरी दिशा दिया। उप विकास अयुक्त मों शाहद अखिल ने अपने संबोधन में कहा कि आज सदर अस्पताल में मेगा हेल्थ कैंप का आयोजन किया जा रहा है। सदर अस्पताल में बहुत सारे विकित्सा सुविधा उपलब्ध है। इस

पाकुड़ प्यादापुर यात्री सेठ कूड़ा घर बना एवं जर्जर की स्थिति में

दैनिक समाज जागरण रिपोर्ट

अविनाश मंडल पाकुड़

पाकुड़ के मालाहाड़ी रोड प्यादापुर पंचायत में यात्री सेठ जर्जर होती जा रही है, और भवन में चारों तरफ करारा भर गया है, भवन का हाल बहुत ही दयनीय है, भवन में यात्रियों से बातालांग के द्वारा उड़ेने वाला की यहां हम लोग बैठक आयोजित किया गया है जिन लोगों को आगे का इलाज का जरूरत है। ऐसे लोगों को आज इस कैंप में लाया गया है ताकि जो टेटर का जरूरत है जो किया जा सके। उपायुक्त ने बताया कि मेंगा हेल्थ कैंप में लोगों को आप हुए विशेषज्ञ चिकित्सक मरीजों का चिह्नित किया गया है। गंभीर व्यायामियों के मरीजों की आगे की विकित्सा के लिए भी इंतजाम



पीला गांडी के बीच बैठकर बस का इंतजार करते हैं, एक तरफ

हमारे प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत अभियान चला रहा है, लेकिन यहां भवन के अंदर में ऐसा कुछ नहीं और मरम्मत का काम करवाएंगे

भी लगा हुआ है जिससे यात्रियों को बहुत कठिनाई झेलनी पड़ती है इस

गांडी सेठ पर किसी अंदाज 12 रुपये प्रदायकारी का धन क्यों नहीं पड़ता है, जब हमने प्यादापुर पंचायत मुखिया से दूरभाषा में बात की तो उड़ेने वाला की यहां क्रेश मरीजों की देखभाल करते हैं, सुबह नहाने और नाशा करने अपने घर खुट्टापाड़ा गए थे, करीब 11 बजे सुबह बसाले पर कर जब यहां तो देखा की उनके केसर मरीजों के स्टोर रूम का दरवाजा टूटा पड़ा है, और बाहर क्रेशर का लाइ

का पार्सर रखा पड़ा है, अंदर जानके

महीना पहले ही युविख्या बने हैं और हमें इस बचन के लिए साफ सफाई में ही बस का इंतजार करना पड़ता

हमारे प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत अभियान चला रहा है, लेकिन यहां भवन के अंदर में ऐसा कुछ नहीं और मरम्मत का काम करवाएंगे

महीना पहले ही युविख्या बने हैं और हमें इस बचन के लिए साफ सफाई में ही बस का इंतजार करना पड़ता

हमारे प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत अभियान चला रहा है, लेकिन यहां भवन के अंदर में ऐसा कुछ नहीं और मरम्मत का काम करवाएंगे

महीना पहले ही युविख्या बने हैं और हमें इस बचन के लिए साफ सफाई में ही बस का इंतजार करना पड़ता

हमारे प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत अभियान चला रहा है, लेकिन यहां भवन के अंदर में ऐसा कुछ नहीं और मरम्मत का काम करवाएंगे

महीना पहले ही युविख्या बने हैं और हमें इस बचन के लिए साफ सफाई में ही बस का इंतजार करना पड़ता

हमारे प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत अभियान चला रहा है, लेकिन यहां भवन के अंदर में ऐसा कुछ नहीं और मरम्मत का काम करवाएंगे

महीना पहले ही युविख्या बने हैं और हमें इस बचन के लिए साफ सफाई में ही बस का इंतजार करना पड़ता

हमारे प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत अभियान चला रहा है, लेकिन यहां भवन के अंदर में ऐसा कुछ नहीं और मरम्मत का काम करवाएंगे

महीना पहले ही युविख्या बने हैं और हमें इस बचन के लिए साफ सफाई में ही बस का इंतजार करना पड़ता

हमारे प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत अभियान चला रहा है, लेकिन यहां भवन के अंदर में ऐसा कुछ नहीं और मरम्मत का काम करवाएंगे

महीना पहले ही युविख्या बने हैं और हमें इस बचन के लिए साफ सफाई में ही बस का इंतजार करना पड़ता

हमारे प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत अभियान चला रहा है, लेकिन यहां भवन के अंदर में ऐसा कुछ नहीं और मरम्मत का काम करवाएंगे

महीना पहले ही युविख्या बने हैं और हमें इस बचन के लिए साफ सफाई में ही बस का इंतजार करना पड़ता

हमारे प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत अभियान चला रहा है, लेकिन यहां भवन के अंदर में ऐसा कुछ नहीं और मरम्मत का काम करवाएंगे

महीना पहले ही युविख्या बने हैं और हमें इस बचन के लिए साफ सफाई में ही बस का इंतजार करना पड़ता

हमारे प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत अभियान चला रहा है, लेकिन यहां भवन के अंदर में ऐसा कुछ नहीं और मरम्मत का काम करवाएंगे

महीना पहले ही युविख्या बने हैं और हमें इस बचन के लिए साफ सफाई में ही बस का इंतजार करना पड़ता

हमारे प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत अभियान चला रहा है, लेकिन यहां भवन के अंदर में ऐसा कुछ नहीं और मरम्मत का काम करवाएंगे

महीना पहले ही युविख्या बने हैं और हमें इस बचन के लिए साफ सफाई में ही बस का इंतजार करना पड़ता

हमारे प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत अभियान चला रहा है, लेकिन यहां भवन के अंदर में ऐसा कुछ नहीं और मरम्मत का काम करवाएंगे

महीना पहले ही युविख्या बने हैं और हमें इस बचन के लिए साफ सफाई में ही बस का इंतजार करना पड़ता

हमारे प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत अभियान चला रहा है, लेकिन यहां भवन के अंदर में ऐसा कुछ नहीं और मरम्मत का काम करवाएंगे

महीना पहले ही युविख्या बने हैं और हमें इस बचन के लिए साफ सफाई में ही बस का इंतजार करना पड़ता

हमारे प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत अभियान चला रहा है, लेकिन यहां भवन के अंदर में ऐसा कुछ नहीं और मरम्मत का काम करवाएंगे

